Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 30th April 2019, Revised on 10th May 2019; Accepted 18th May 2019

शोध–आलेख

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में हिंदी भाषा शिक्षण में समवाय विधि की प्रभावशीलता

* डॉ. ललित कुमार श्रीमाली
सहायक आचार्य (हिन्दी शिक्षण)
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय उदयपुर
Email-lalitshrimali2014@gmail.com, Mob.-9414917967

Key words - Study, Learning Abilities, Educational Achievement etc.

सारांश

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह अध्ययन किया गया है कि परम्परावादी शिक्षण की तुलना में यदि समवाय विधि का उपयोग किया जाए तो शिक्षण प्रभावी हो सकता है। विद्यार्थियों की समझ का विस्तार हो सकता है। इस शोध कार्य में विद्यार्थियों का समवाय विधि के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण किया गया। शिक्षणोपरान्त पश्च परीक्षण के दत्तों का मध्यमान अधिक प्राप्त हुआ एवं प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। इसका अर्थ यह निकलता है कि हिंदी शिक्षण में अध्यापकों का सारा जोर शब्दार्थ, व्याख्या और रचनाओं पर आधारित निश्चित उत्तरों को जानने और उन्हें याद करवाने पर रहता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के समय समवाय विधि से पढ़ाया जाए तो अच्छे परिणाम सामने आ सकते हैं। इस विधि से हम उन्हें साहित्य की विधाओं का अध्ययन कराते समय साथ ही प्रसंगानुसार व्याकरण का भी शिक्षण करवाते हैं। इससे विद्यार्थियों को समझने में आसानी रहती है।

प्रस्तावना

शिक्षकों द्वारा बालक को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास का अवसर प्रदान करना चाहिए। शिक्षा का कार्य प्रतिबंध नहीं, वरन् पथ–प्रदर्शन है। शिक्षा द्वारा बालक के दैवी गुणों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। बालकों के लिए सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली वह मानी जाती है जिसमें उन्हें क्रिया व खेल के माध्यम से स्वतंत्रतापूर्वक आत्म शिक्षा, आत्म प्रकाशन एवं आत्म विकास का और स्वतंत्र एवं स्वाभाविक व्यक्तित्व के निर्माण का अवसर मिले। इस प्रकार की शिक्षा द्वारा बालकों में सीखने के प्रति रुचि, लगाव एवं निष्ठा बनी रहती है और उनमें किसी प्रकार का प्रतिरोध या कुण्ठा उत्पन्न नहीं हो पाती। इस प्रकार की शिक्षा में शिक्षक का स्थान एक पथ–प्रदर्शक का होता है, शासक या नियंत्रणकर्ता का नहीं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005 में भी शिक्षक को सुगमकर्ता (थ्ंबपसपजंजवत) का दर्जा दिया गया है और यह माना गया है कि बच्चे ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं। शिक्षक और अभिभावक तो केवल उन्हें वह वातावरण और अवसर उपलब्ध कराते हैं जिससे ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया सहज हो।

सामान्यतः भाषा के दो रूप होते हैं– मौखिक और लिखित, दोनों रूपों की शिक्षा देने के लिए हम विद्यार्थियों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करते हैं। साहित्य की विविध विधाओं (पद्य एवं गद्य) का शिक्षण करते हैं और भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराते हैं। समवाय प्रणाली में इस समस्त कार्य को एक साथ करने पर बल दिया जाता है। इसमें रचना, कहानी, पद्य आदि की शिक्षा देने के साथ–साथ ही प्रसंग और अवसरानुकूल व्याकरण की शिक्षा दी जाती है। उदाहरण के लिए– रचना पढ़ाते समय यदि कई वाक्यों में संज्ञा शब्द आए हो तो विद्यार्थियों को संज्ञा का ज्ञान कराया जा सकता है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में हिंदी भाषा शिक्षण में समवाय विधि की प्रभावशीलता''

शोध उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में वाक्य संरचना आधारित वस्तुस्थिति का पता लगाना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा के संवर्धन में समवाय विधि की प्रभावशीलता का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में वाक्य संरचना आधारित वस्तुस्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा के संवर्धन में समवाय विधि की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु उदयपुर शहर में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित निजी विद्यालयों में से यादृच्छिक चयन विधि से एक विद्यालय का चयन कर चयनित विद्यालय से नवीं एवं दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों में से न्यादर्श हेतु यादृच्छिक चयन विधि से 30 विद्यार्थियों का चयन कर सिक्का उछालते हुए दो समूहों का निर्माण किया गया। तत्पश्चात् पूर्व परीक्षण करके उनका अकादमिक समानीकरण स्तर जाँचा गया तथा आवश्यकतानुसार दोनों समूहों का अकादमिक समानीकरण किया गया, जिसका विभाजन निम्नानुसार है:–

समूह	छात्र संख्या
प्रायोगिक समूह	30
नियंत्रित समूह	30

समस्या का औचित्य

माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण की वर्तमान स्थिति संतोषप्रद नहीं है। वाक्य संरचना का अध्यापन करवाते समय शिक्षक सामान्य तौर पर छात्रों को रटवा रहे हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति से विद्यार्थी सही संदर्भ समझे बगैर केवल रट रहे हैं, इससे उनमें वाक्य संरचना के प्रति जो समझ होनी चाहिए उसका विकास नहीं हो पा रहा है। वर्तमान में शिक्षा जगत में जो नवाचार आधारित शिक्षण हो रहा है उसमें ये विद्यार्थी वंचित रह रहे हैं।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह अध्ययन किया गया है कि परम्परावादी शिक्षण की तुलना में यदि समवाय विधि का उपयोग किया जाए तो शिक्षण प्रभावी हो सकता है। विद्यार्थियों की समझ का विस्तार हो सकता है। इस शोध कार्य से माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कराने वाले शिक्षकों और शोधार्थियों को एक नई दिशा मिल सकेगी।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य उदयपुर शहर के चयनित विद्यालय की नवीं एवं दसवीं कक्षा तक सीमित रखा गया।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रायोगिक विधि का उपयोग किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य स्वनिर्मित उपकरण ''हिंदी भाषा में वाक्य संरचना आधारित पूर्व एवं पश्च परीक्षण'' का उपयोग किया गया।

हिंदी भाषा में वाक्य संरचना एवं व्याकरणिक ज्ञान के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह (n=30, 30) के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है –

सारणी संख्या 1

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की हिंदी भाषा में वाक्य संरचना से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

परीक्षण	प्रायोगिक समूह		नियंत्रित समूह		टी– मान	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
पूर्व	25.87	5.24	23.53	4.12	1.92	सार्थक अंतर नहीं
पश्च	32.67	2.82	27.43	3.43	6.45	.01 स्तर पर सार्थक अंतर

व्याख्या

सारणी 1 दर्शाती है कि प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व हिंदी भाषा में वाक्य संरचना की दृष्टि से दोनों समूहों के मध्य उनका अकादमिक स्तर जाँचा गया, जिसमें दोनों समूहों के मध्य टी–मान 1.92 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणी मान 2.00 से कम प्राप्त हुआ, अर्थात् इनके मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व दोनों समूह अकादमिक दृष्टि से समान स्तर पर थे।

प्रायोगिक शिक्षण के पश्चात् लिए गए परीक्षण के दत्तों के मध्य टी–मान ज्ञात किया गया जिसके अंतर्गत .01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें नियंत्रित समूह की तुलना में प्रायोगिक समूह का मध्यमान उच्च पाया गया, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह में शिक्षण के फलस्वरुप विद्यार्थियों का अकादमिक विकास हुआ है।

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत पद परिचय आधारित वस्तुस्थिति का अध्ययन

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह (दत्र30ए 30) का हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत पद परिचय क्षेत्र से प्राप्त प्राप्ताकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण सारणी संख्या 2 में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या 2

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत पद परिचय क्षेत्र से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		टी– मान	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
प्रायोगिक	3.97	0.84	4.43	0.80	2.20	.05 स्तर पर सार्थक अंतर
नियंत्रित	3.77	1.15	4.23	0.62	1.97	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से परिलक्षित होता है कि प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप पद परिचय संबंधी दत्तों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगणित टी–मान 2.20 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणीमान 2.00 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप ज्ञान में वृद्धि हुई है।

नियंत्रित समूह के अंतर्गत पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगणित टी–मान 1.97 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणीमान 2.00 से कम है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि नियंत्रित समूह में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत वाक्य संरचना आधारित वस्तुस्थिति का अध्ययन :–

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह (दत्र30ए 30) का हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत वाक्य संरचना संबंधी प्राप्ताकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या 3

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत वाक्य संरचना संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		टी– मान	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
प्रायोगिक	3.57	1.63	4.47	0.81	2.72	.01 स्तर पर सार्थक अंतर
नियंत्रित	3.73	1.31	4.00	1.26	0.80	सार्थक अंतर नहीं

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप वाक्य संरचना संबंधी दत्तों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगणित टी–मान 2.72 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .01 स्तर के सारणीमान 2.66 से अधिक है। अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर पाया गया। प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप विद्यार्थियों में पूर्व परीक्षण की अपेक्षा पश्च परीक्षण का मध्यमान अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक शिक्षण के पश्चात् विद्यार्थियों में वाक्य संरचना करने के ज्ञान में वृद्धि हुई है।

नियंत्रित समूह के अंतर्गत पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य वाक्य संरचना संबंधी दत्तों का संगणित टी–मान 0.80 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणीमान 2.00 से कम है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि नियंत्रित समूह में पूर्व एवं पश्च परीक्षण में हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत वाक्य संरचना संबंधी दत्तों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य निष्कर्ष

1. **समग्र प्राप्तांक के आधार पर –** प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह का हिंदी भाषा में वाक्य संरचना एवं व्याकरणिक ज्ञान की वस्तुस्थिति का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व अकादमिक दृष्टि से समान पाए गये।

2. प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह का हिंदी भाषा में वाक्य संरचना के संदर्भ में समवाय विधि के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण किया गया। शिक्षणोपरान्त पश्च परीक्षण के दत्तों का मध्यमान अधिक प्राप्त हुआ एवं प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह अंतर समवाय विधि के माध्यम से किए गए शिक्षण के फलस्वरुप प्राप्त हुआ।

3. पद परिचय के अंतर्गत प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर पाया गया, जबकि इस क्षेत्र में नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4. वाक्य संरचना संबंधी दत्तों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरुप विद्यार्थियों में पूर्व परीक्षण की अपेक्षा पश्च परीक्षण का मध्यमान अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक शिक्षण

के पश्चात् विद्यार्थियों में वाक्य संरचना करने के ज्ञान में वृद्धि हुई है, जबकि नियंत्रित समूह में पूर्व एवं पश्च परीक्षण में हिंदी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान के अंतर्गत वाक्य संरचना संबंधी दत्तों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध निष्कर्षों के आधार पर शोधकर्त्ता ने पाया कि अधिकतर विद्यार्थियों में प्रायोगिक शिक्षण से पूर्व हिंदी में वाक्य संरचना संबंधी त्रुटियाँ पाई गई। विद्यार्थियों को समवाय विधि के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण किया गया। शिक्षणोपरान्त पश्च परीक्षण के दत्तों का मध्यमान अधिक प्राप्त हुआ एवं प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। इसका अर्थ यह निकलता है कि हिंदी शिक्षण में अध्यापकों का सारा जोर शब्दार्थ, व्याख्या और रचनाओं पर आधारित निश्चित उत्तरों को जानने और उन्हें याद करवाने पर रहता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के समय समवाय विधि से पढ़ाया जाए तो अच्छे परिणाम सामने आ सकते हैं। इस विधि से हम उन्हें साहित्य की विधाओं का अध्ययन कराते समय साथ ही प्रसंगानुसार व्याकरण का भी शिक्षण करवाते हैं। इससे विद्यार्थियों को समझने में आसानी रहती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमरनाथ (2013) : हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. ढोंढियाल एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (2006) : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. एन.सी.ई.आर.टी. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा, नई दिल्ली।
4. मेहरोत्रा, आर.सी. : ''सैकण्डरी सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुके ान'' एम.बी. बुच, 1972–78, पृ.सं. 296।
5. शर्मा, आर.ए. (1995) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
6. शर्मा, राजमणि (2014) : हिंदी भाषा इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सिंह, लाल साहब (2007) : मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
8. सिंह, निरंजन कुमार (2011) : माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
9. क्षितिज (2011) : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
10. सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोत्रा, आर.एन. (1973) : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
11. तिवारी, भोलानाथ एवं भाटिया, कैलाशचन्द्र : 'हिन्दी भाषा शिक्षण लिपि प्रकाशन' अंसारी रोड़, नई दिल्ली।

*** Corresponding Author:**
डॉ. ललित कुमार श्रीमाली, *सहायक आचार्य (हिन्दी शिक्षण)*
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय उदयपुर
Email-lalitshrimali2014@gmail.com, Mob.-9414172016